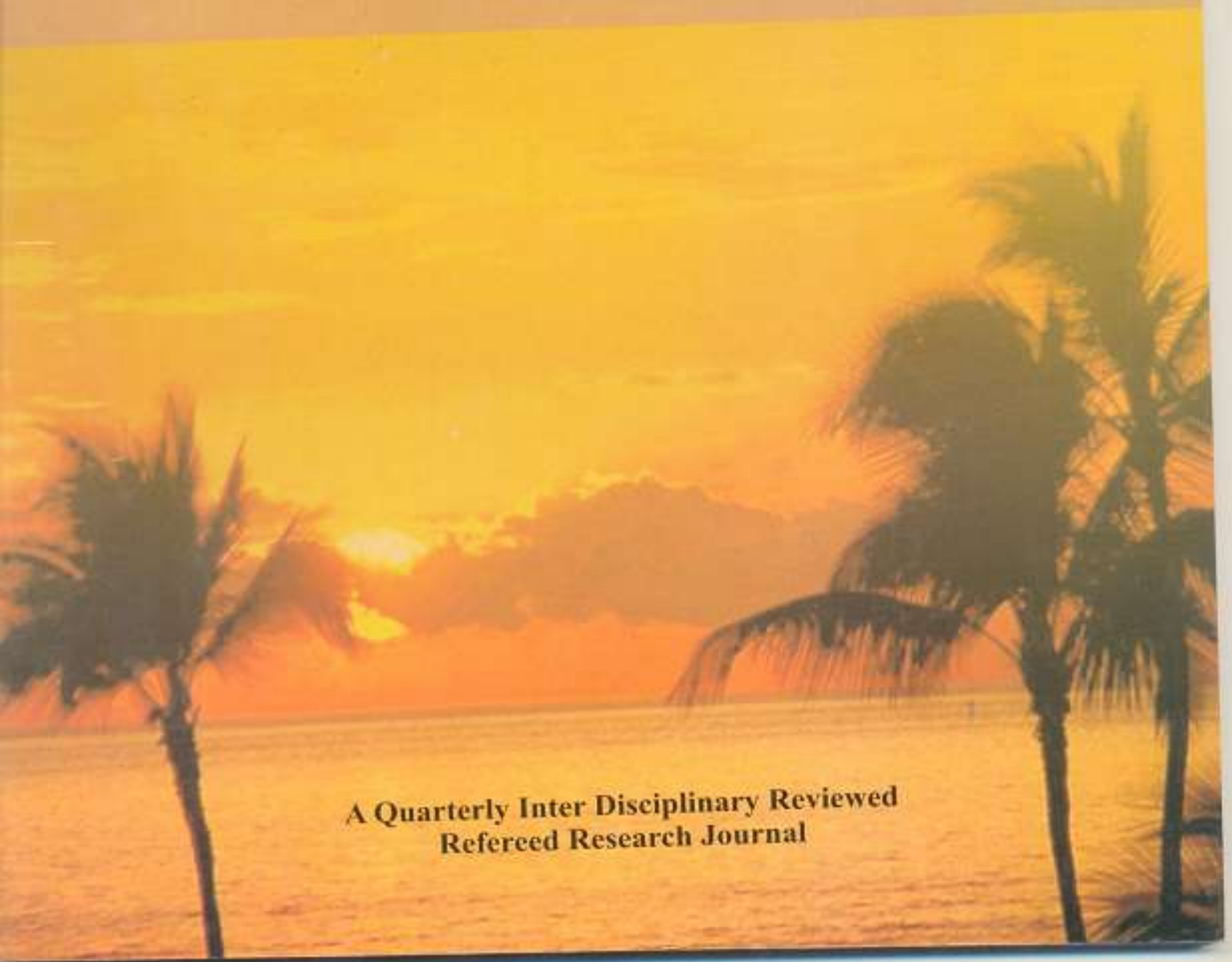
ISSN 0975-8771
RNI : CHHBIL/2010/36213
Vol. - IV (II)
April to June 2013

Educational Waves



A Quarterly Inter Disciplinary Reviewed
Refereed Research Journal

Educational Waves

Multidisciplinary Quarterly Research Journal

RNI : CHHBIL/2010/36213 Vol-IV ISSUE-II April to June 2013 ISSN 0975-8771

CONTENTS

Subject	Page No.
✧ डॉ. अम्बेडकर का सामाजिक चिन्तन * संध्या जायसवाल	45-46
✧ आशा रावत : व्यक्तित्व एवं कृतित्व * रमेश कुमार दण्डन	47-48
✧ लघु कथा : शैली वैज्ञानिक विश्लेषण * नंदिनी तिवारी ** संजय तिवारी	49-51
✧ अमेरिका में हुए आतंकवादी हमलों के बाद भारत के प्रति अमेरिका का नजरिया * श्रीमती दीपा मलिक	52-53
✧ कबीर के आध्यात्म का आधार समन्वय पर टिका हुआ है * सकीदाउ चन्द्रा	54
✧ शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन * प्रशांत राव ** ए.के. पोद्दार	55-58
✧ निराला की कविता कुकुरमुत्ता में प्रगतिशीलता के तत्व * दुर्गेश साहू	59-60
✧ छत्तीसगढ़ के ग्रामीण विकास में कृषि श्रमिकों एवं रोजगार की भूमिका * श्रीमती वृंदा सेनगुप्ता ** सतीश अग्रवाल	61-64
✧ संस्था के गुणवत्ता के संदर्भ में प्राचार्यों का प्रत्यक्षीकरण : एक अध्ययन * अनिता सिंह ** कृष्णेराज	65-66
✧ कन्या भ्रूण हत्या – एक सामाजिक समस्या * दुर्गा बाजपेयी ** श्रीमती शारदा दुबे	67-69
✧ छत्तीसगढ़ राज्य के आर्थिक विकास में राज्य विद्युत मण्डल की भूमिका * प्रियांक मिश्रा	70-72
✧ मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में नारी विमर्श * सुनीता मिश्र	73-74
✧ पंडित अटल बिहारी वाजपेयी के काव्य में छन्द योजना * श्रीमती जयश्री शुक्ल	75-77
✧ छत्तीसगढ़ी नाटकों की परंपरा * श्रीमती रचना पांडे	78-79
✧ हिन्दी कथा साहित्य में दलित विमर्श * रेशमा अन्सारी	80-82
✧ हिंदी और बंगला साहित्य का अंत:संबंध * विश्वासी एक्का	83-85
✧ सर्वधर्मसमभाव और स्वामी विवेकानंद * सरस्वती वर्मा	86-87

Educational Waves
Volume IV (II)

Apr.-June-2013
Page - 47 to 48

आशा रावत : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

* रमेश कुमार टण्डन

सारांश:

दस वर्ष की उम्र से ही नाटकों में अभिरुचि आपके साहित्यिक अवदान को निरूपित करती है। विभिन्न विधाओं - कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध आदि में लेखनी चलाना आसान कार्य नहीं है। परन्तु आपने एकाधिक शैली का प्रयोग करते हुए विविध क्षेत्रों में अवस्थित अभावों को उकेरा है। सामाजिक व पारिवारिक दायित्व को सफलतापूर्वक निर्वहन करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों पर भी आपने नजर डाली। व्यंग्य लेखिका के काव्य को आत्म व्यंग्य लिखते हुए पूरी तरह निभाया है। अपने लक्ष्य के प्रति आबद्ध लेखिका व्यंग्य बाण से स्वयं को भी छलनी करने से नहीं चूकतीं। आपने यह सिद्ध कर दिया कि परिवार की सारी जिम्मेदारियों को निभाते हुए भी कोई व्यंग्यकार बन सकता है।

व्यक्तित्व:

लखनऊ के एक मध्यवर्गीय परिवार में 15 दिसम्बर सन् 1954 में आपका जन्म हुआ। पिता का नाम श्री आनंद सिंह रावत तथा माँ का नाम श्रीमती शान्ति रावत है। आप अपने माता - पिता की सबसे बड़ी संतान हैं। आपसे छोटी दो बहनें उशा व अमिता तथा सबसे छोटा भाई हिमांशु है। पिता सचिवालय में सूचना विभाग में रहे। वे बहुत विद्वान, कर्मठ तथा सामाजिक प्रवृत्ति के हैं। उन्हें लिखने का भी शौक है। उनकी सशक्त लेखन - शैली ने आपको बहुत प्रभावित किया। माँ अत्यन्त धार्मिक, विनयशील तथा मिलनसार प्रवृत्ति की रही हैं।

बचपन से ही आपको पढ़ने का बहुत शौक रहा है। आपके पिता जी कहते हैं कि मैंने आशा को खेल - खेल में ही अक्षर-ज्ञान करा दिया था। उन दिनों नर्सरी, केजी. तो था नहीं; अत: 6 वर्ष की उम्र में आपको कक्षा तीसरी में दाखिला दिया गया। आपके पिता को पढ़ाने का शौक था और आपको पढ़ने का, अत: आप हमेशा कक्षा में दूसरी या तीसरी स्थिति प्राप्त करती रहीं।

इस स्थिति में अचानक भूचाल आया। छठवीं कक्षा की छमाही परीक्षा में दो विषयों में अनुत्तीर्ण। सभी स्तब्ध। चकित माता - पिता ने आपके बस्ते की तलाशी ली, तो आपके हस्तलिखित नाटकों से भरे दो रजिस्टर मिले। दरअसल, उन दिनों आप लोग रामलीला, नाटक, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि देखने जाया करते थे और छुट्टियों में आँगन के खुले मंच में उन्हें खेला करते थे। आस पड़ोस के एक दर्जन बच्चों में सबसे बड़ी होने के कारण आप लीडर थीं। अत: आगामी छुट्टियों की पूरी योजना आपने रजिस्टर में दर्ज की थीं कि कौन-सा नाटक कब खेला जाएगा, कौन क्या बनेगा, क्या पहनेगा, कौन-कौन से डायलॉग होंगे आदि। उस समय तो गुस्से में आपके रजिस्टर फाड़ दिए गए, पर दस वर्ष की उम्र के लेखक की भ्रूण हत्या हो जाने के कारण बाद में आपके पिता को अफसोस हुआ।

सृजन के कीट कहीं दबे रहने के कारण बीए. में हिन्दी साहित्य पढ़ने के दौरान कविताएँ लिखने की कुलबुलाहट आपके मन में जागी और प्रति से प्रेम होने के कारण कुछ कविताएँ उसी को समर्पित कर लिख डालीं। उन दिनों गर्मी, सर्दी, बारिश की बूंदें, धुआँ, कोहरा आदि कविताओं का जन्म हुआ। फिर बीएड. करते समय बच्चों से सामना हुआ। उनकी शरारतों से मुग्ध हो कुछ कविताएँ लिखीं। अध्यापन कार्य के दौरान राजनीति विज्ञान में एमए. प्राइवेट करते - करते कुछ सामयिक और प्रासंगिक लेख लिखे। सन् 1975 में इमर्जेन्सी के दौरान आपने सरकार विरोधी ओजक लेख लिखे। उन्हें प्रकाशित देख आपके पिताजी सकते में आ गए और समझाते हुए बोले कि बेटा..बहुत सख्ती चल रही है। अब ऐसा मत लिखना वरना तुम्हें पुलिस पकड़कर ले जाएगी और नौकरी पर बन आयेगी।

एमए. के दौरान घर में आपके विवाह की बात चलने लगी, पर आप विवाह नहीं करना चाहती थी। आप महत्वाकांक्षी प्रवृत्ति की रही हैं। लेखन को तो लक्ष्य बना ही लिया था, किन्तु आपकी तीव्र इच्छा प्रशासनिक सेवाओं में जाने की थी। आपने विवाह न करने का अनुरोध किया। पर जब बातों से बात नहीं बनी तो आपने पत्र लिखकर बताया कि आप विवाह क्यों नहीं करना चाहती हैं। आपने यह भी कहा कि लक्ष्य पूर्ण होने के बाद आप जो कहोगे, वही करूंगी। लेकिन आपसे छोटी दो बहिनें थी, इसलिए आपके माता-पिता ने रो कर,समझा कर विवाह के लिए राजी किया।

21 नवम्बर सन् 1975 को आपका विवाह श्री सुरेन्द्र कुमार सिंह रावत के साथ सम्पन्न हुआ। फिर आपने अपने आपको परिस्थितियों के हवाले छोड़ दिया। सौभाग्य से आपके श्वसुर जी आपकी पढ़ाई की शौक से खुश थे। उन्होंने सदा आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि आप पी-एचडी. करें। यह अलग बात है कि उनकी यह इच्छा बहुत बाद में पूरी हो पायी।

यद्यपि घर में आपके लेखन पर मनाही नहीं थी, किन्तु विवाह के बाद बदले हुए परिवेश, जिम्मेदारियों, बच्चे आदि के कारण एक बार फिर आपके लेखक की हत्या हुई - इस बार स्वयं के हाथों। आपकी मूल महत्वाकांक्षाएँ नेपथ्य में चली गयीं।

सन् 1987-88 में हिन्दी साहित्य में एमए. करने के दौरान आपके

* (सहा.प्रा.) महात्मा गांधी शा. महावि. खरसिया

* रमेश कुमार टण्डन

भीतर छिपा कवि हृदय छटपटाने लगा और लगभग 15 वर्षों से बंद कलम फिर से उठायीं। लेखन की दूसरी पारी की शुरूआत आपने कविता और व्यंग्य से की। व्यंग्य आपका प्रिय विशय था, इसलिए एम्.ए. के बाद इसी विशय पर शोध किये। शोध-प्रबंध का शीर्शक था - स्वातंत्योत्तर व्यंग्य निबंधों में सामाजिक चेतना। शोध कार्य के दौरान प्रसिद्ध व्यंग्यकार रवीन्द्रनाथ त्यागी एवं अन्य साहित्यकारों से आपकी मुलाकात हुई। कुछ मुश्किलें भी आई। बवासीर होने के कारण हीमोग्लोबिन 55 : हो गया। गठिया की बीमारी की वजह से तीन महीने बिस्तर से उठ न सके। अंततः 1996 में शोध कार्य पूरा हुआ।

कृतित्व:

आपका प्रथम व्यंग्य संग्रह 'जस की तस' सन् 1994 में प्रकाशित हुई। पुस्तक चर्चित हुई। उसका एक व्यंग्य 'बोल मेरी मछली' अनुपम भारती भाग - 1 में सम्मिलित है। 'गुरू दक्षिणा' उपन्यास में आपने पब्लिक स्कूल की अनेक विसंगतियों को लिया है। अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की हकीकत उजागर करने में आप पूर्ण रूप से सफल रही हैं। इसमें आधुनिक मानवीय कमजोरियों से भी साक्षात्कार होता है। संवाद शैली में लिखे कथ्य से पाठक को नाटक जैसा आनन्द मिलता है। आपके अनुसार, "व्यंग्य नकारात्मक न हो कर सकारात्मक होना चाहिए। उसे मीठी छुरी की तरह वार करना चाहिए ताकि हँसते - हँसते पाठक का ध्यान उस विसंगति पर केन्द्रित हो और तब वह कुछ सोचने के लिए मजबूर हो उठे।" तीसरी पुस्तक 'पंछी पाड़ों मा लौटिएन' एक सामाजिक उपन्यास है, जो पहाड़ की व्यथा पर आधारित है। 'मेरा गाँव होशियारपुर' हास्य व्यंग्य नाटक है, जो दूरदराज एक पहाड़ के निवासियों पर केन्द्रित है। इसमें उल्लेखित है कि पहाड़ के निवासी शहरी विकास की पदचाप से दूर हैं, किन्तु अपने आप में सुखी, सन्तुष्ट तथा सामाजिक हैं। अंत में जैसे ही पहाड़ का वह गाँव सड़क के माध्यम से शहर से जुड़ता है, कल-कल छल-छल बहता जीवन का नैसर्गिक झरना सूख जाता है। पाँचवी पुस्तक 'चाहिए एक भगतसिंह पर', एक व्यंग्य निबंध संग्रह है। संग्रह में शामिल रचनाओं का कैनवास काफी स्तृत है। घर-परिवार, पास-पड़ोस, कार्यालय, परिवेश, शिक्षण संस्थान, राजनीति, नौकरशाही, साहित्य, स्वास्थ्य सेवा, रेलगाड़ी, घोटाले, बस यात्रा, फिल्म, सरकार, कारखाने, ग्राम्य जीवन, महानगर, कालोनी-कल्चर आदि विविध क्षेत्रों पर प्रहार है। परन्तु भाशा एवं शैली में विनोदप्रियता एवं चुहलता झलकती है। आपके व्यंग्य निबंधों में कथोपकथन की एक झलक इस प्रकार है-

'अरे भई, बस कितने बजे चलेगी ?'

'बस जी, चलने वाली है।' ड्राइवर विनम्र था।

'हम नौ बजे से सुन रहे हैं कि चलने वाली है और साढ़े नौ हो गए।'

'पाँच मिनट और सर..। कुछ यात्री आ रहे हैं।'

अन्य उदाहरण-

'क्या ? भरी.. ? किस चीज की..!' मैंने हैरानी से पूछा।

'टॉमेटो सॉस की।'

'टॉमेटो सॉस..! वह उठाकर ले गई। बिना पूछे..!'

मैं आश्चर्य में विरोध करना भूल गई थी अतः फिर पूछा,

'बोतल पूरी भरी थी ?'

'न सही पूरी, आधी तो थी न !'

'ओह..! इसीलिए वह समझी होगी कि आप उसे दे रहीं हैं!'

मैंने इत्मीनान की साँस ली।

डॉ. आशा रावत के व्यंग्य निबंधों में प्रतीक उपमानों का सहजता से प्रयोग हुआ है- "कुछ दिन बाद नरेश ताई को शहर घुमाने ले गया। रास्ते में उसने दो पंक्तियों में फैली अनियंत्रित भीड़ देखी। एक पंक्ति में स्त्रियाँ थीं, दूसरी में पुरूष। सबके सब एक-दूसरे को इस तरह देख रहे थे, जैसे युद्ध से ठीक पहले कौरव-पांडव अपने-अपने हथियार भांज रहे हों और सामने वाले को ललकारने का मौका ढूँढ रहे हों।" आपने अपने निबंधों में प्राचीन कविताओं को भी समावेश किया है, "या मुरली मुरलीधर के अधरान धरी अधरा न धरौंगी।" अर्वाचीन कविताओं का भी उल्लेख किया है-

"खुदा करे हसीनों के बाप मर जाएँ

और हम मातम के बहाने उनके घर जाएँ।"

मुहावरों-कहावतों का प्रयोग भी आपने किया है -

1. मेरे पतिदेव सरकारी महकमे में हैं, अतः मुझे कभी कागज-कलम का टोटा नहीं पड़ा।

2. अगर कभी आत्मा से उठकर कचोट सिर उठाती है तो मैं यह कहकर उसका सिर कलम कर देती हूँ कि यह सरकार हमसे बनी है।

3. मेरे आस-पास एक खामोष-सा शोर मचला- 'साले ने कुत्ते की नाक पाई है।

4. 'अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे' वाली खुशी में मैं इतनी डूबी कि मेरी नींद पंछी बनकर फुर्र हो गई।

संदर्भ:

- रावत, डॉ. आशा : जस की तस
- रावत, डॉ. आशा : गुरू दक्षिणा
- रावत, डॉ. आशा : पंछी पाड़ों मा लौटिएन
- रावत, डॉ. आशा: मेरा गाँव होशियारपुर
- रावत, डॉ. आशा : चाहिए एक भगतसिंह पर